शब्दार्थ स्निग्ध-तरल, शीतल ज्योत्स्ना-चाँदनी: उज्ज्वल-सफेद:
अपलक-एकटक; अनन्त-जिसका अन्त न हो, आकाश; नीरव-शान्त, नि:शब्द: भूतल-धरातल, पृथ्वी सेकत-बालू, रेत: शय्या-सेज, बिछावन: दुग्ध-दूध, धवल-सफेद, तन्वंगी-कृशकाय, पतली: ग्रीष्म-विरल-गर्मी के कारण शिथिल पड़ी हई: श्रान्त-थकी हुई, क्लान्त-शिथिल पसीने से भरी निश्चल-प्रवाहहीन; तापस-बाला-तपस्विनी बालिका; निर्मल-स्वच्छ, पावन शशिमख-चन्द्रमा के समान मुख, दीपित-प्रकाशित; मद करतल- कोमल हथेली: उर-छाती: कुन्तल-केश, बाल, तार-तरल-तारों के समान चंचल वा उज्ज्वल; नीलाम्बर-नीले आकाश रूपी वस्त्र; विभा-चमक; वर्तुल-गोलाकार, टेढ़ी।

सन्दर्भ प्रस्तुत पद्यांश हमारी हिन्दी पाठ्यपुस्तक में संकलित सुमित्रानन्दन पन्त द्वारा रचित 'नौका-विहार' शीर्षक कविता से उदधत है।

प्रसंग प्रस्तुत पद्यांश में कवि पन्त जी ने चाँदनी रात में किए गए नौका-विहार का चित्रण किया है। इसमें कवि ने गंगा की कल्पना नायिका के रूप में की है।

व्याख्या कवि कहता है कि चारों ओर शान्त, तरल एवं उज्ज्वल चाँदनी छिटकी हुई है। आकाश टकटकी बाँधे पृथ्वी को देख रहा है। पृथ्वी अत्यधिक शान्त एवं शब्दरहित है। ऐसे मनोहर एवं शान्त वातावरण में क्षीण धार वाली गंगा

बालू के बीच मन्द-मन्द बहती ऐसी प्रतीत हो रही है मानो कोई छरहरे, दुबले-पतले शरीर वाली सुन्दर युवती दूध जैसी सफेद शय्या पर गर्मी से व्याकुल होकर थकी, मुरझाई एवं शान्त लेटी हुई हो। गंगा के जल में चन्द्रमा का बिम्ब झलक रहा है, । जो ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे गंगारूपी कोई तपस्विनी अपने चन्द्र-मुख को अपने ही कोमल हाथों पर रखकर लेटी हुई हो और छोटी-छोटी लहरें उसके वक्षस्थल। पर ऐसी प्रतीत होती है मानों वे लहराते हुए कोमल केश हैं। तारों भरे आकाश की चंचल परछाईं गंगा के जल में जब पड़ती है, तो वह। ऐसी प्रतीत होती है मानो गंगा रूपी तपस्विनी बाला के गोरे-गोरे अंगों के स्पर्श स । बार-बार कॉपता, तारों जड़ा उसका नीला आँचल लहरा रहा हो। उत्त। आकाशरूपी नीले आँचल पर चन्द्रमा की कोमल चाँदनी में प्रकाशित छोटी-छोटा, कोमल, टेढ़ी, बलखाती लहरें ऐसी प्रतीत होती हैं मानो लेटने के कारण उसका
रेशमी साड़ी में सलवटें पड़ गई हों।

काव्य सौन्दर्य
भाव पक्ष
यहाँ गंगा की विशेषताओं को तपस्विनी बाला के रूप में
प्रकट किया
गया है।
(ii) रस शान्त

शब्दार्थ सत्वर-शीघ्र, तेज; सिकता-बालू, रेत; सस्मित-मुसकराती हुई; पाल-नाव का वेग बढ़ाने हेतु उसके ऊपर लगाई गई चादर; लंगर-नाव को रोके रखने हेतु लोहे का बना भारी काँटा; मृदु-मधुर;
मन्द-मन्द-धीमी-धीमी; मन्थर-धीरे; लघु तरणि-छोटी नाव; तिर रही-तैर रही, पर-पंख, शुचि- स्वच्छ, साफ: बिम्बित-प्रतिच्छायित: रजत पुलिन–चाँद का चमकता हुआ किनारा, रूपहले किनारे; अमन-शान्त; वैभव-ऐश्वर्य; सघन-प्रचुर।

सन्दर्भ पूर्ववत्।

प्रसंग प्रस्तुत पद्यांश में चाँदनी रात में किए जाने वाले नौका-विहार का मनोरम चित्रण किया गया है।

व्याख्या कवि पन्त जी कहते हैं कि वे चाँदनी रात के प्रथम पहर में
नौका-विहार करने के लिए एक छोटी-सी नाव लेकर तेज़ी से गंगा में आगे बढ़ जाते हैं। गंगा के तट के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए वे कहते हैं कि गंगा का तट ऐसा रम्य लग रहा है मानो खुली पड़ी रेतीली सीपी पर चन्द्रमा रूपी मोती की चमक यानी चाँदनी भ्रमण कर रही हो। ऐसे सुन्दर वातावरण में गंगा में खड़ी नावों की पालें नौका-विहार के लिए ऊपर चढ़ गई हैं और उन्होंने अपने

लंगर उठा लिए हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि एक साथ अनेक नावें नौका-विहार के लिए गंगा तट से खुली हैं। लंगर उठते ही छोटी-छोटी नावें अपने पालरूपी पंख खोलकर सुन्दर हंसिनियों के समान धीमी-धीमी गति से गंगा में तैरने लगीं। गंगा का जल शान्त एवं निश्चल है, जो दर्पण के समान शोभायमान है। उस
जलरूपी स्वच्छ दर्पण में चाँदनी में नहाया रेतीला तट प्रतिबिम्बित होकर दोगुने परिमाण में प्रकट हो रहा है। गंगा तट पर शोभित कालाकाँकर के राजभवन का प्रतिबिम्ब गंगा जल में
झलक रहा है। ऐसा लग रहा है मानो यह राजभवन गंगा जलरूपी शय्या पर निश्चिन्त होकर सो रहा है और उसकी झुकी पलकों एवं शान्त मन में वैभवरूपी स्वप्न तैर रहे हैं।

काव्य सौन्दर्य

भाव पक्ष

(i) प्रस्तुत पद्यांश में गंगा के पावन होने तथा इसके तट के अत्यन्त सुन्दर होने का भाव प्रस्तुत किया गया है।

(ii) रस शान्त

कला पक्ष

भाषा संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली शैली प्रतीकात्मक छन्द स्वच्छन्द

शब्दार्थ जल-हिलोर-पानी की लहर; नभ-आकाश; विस्फारित-खुले हुए, विस्तृत; नयन-आँख; तारक-तारे; ज्योतित-प्रकाशित; अन्तस्तल-हृदय; ओट-आड; अविरल-लगातार; झलमल-चमकीला; पैरती-तैरती, कल- सुन्दर; रुपहरे-श्वेत; कच-केश, बाल; ओझल-गायब; तिर्यक्-टेढ़ा, मुग्धा- रूप-आकर्षण देख मुग्ध होने वाली।

सन्दर्भ पूर्ववत्।

प्रसंग प्रस्तुत पद्यांश में नौका-विहार करने के दौरान गंगा की अपूर्व छटा का वर्णन किया गया है।

व्याख्या गंगा में नौका-विहार करते हुए कवि पन्त जी कहते हैं कि नौका चलने के कारण जल में तरंगें उठती हैं, जिससे जल में प्रतिबिम्बित आकाश इस छोर से उस छोर तक हिलता हुआ-सा प्रतीत होता है। जल में पड़ती तारों की परछाई को देखकर ऐसा आभास होता है, मानों तारों का दल जल के अन्दर के
भाग में प्रकाश फैलाकर अपनी आँखें फाड़-फाड़ कर कुछ ढूँढ रहा हो। गंगा में रह-रहकर उठने वाली चंचल लहरें भी अपने आँचल की आड़ में तारे रूपी छोटे-छोटे जगमगाते दीपकों को छिपाकर प्रतिक्षण लुकती-छिपती हुई-सी प्रतीत

दीपकों को छिपाकर प्रतिक्षण लुकती-छिपती हुई-सी प्रतीत होती हैं। वहीं पास में शुक्र तारे की झिलमिलाती परछाई जल में किसी सुन्दर-सी परी की तरह तैरती हुई दिख रही है। श्वेत चमकती हुई जल-तरंगों में उस परछाई के ओझल होने का दृश्य इतना मनोरम है कि कवि को चाँदी से चमकते सुन्दर केशों में परी के छिप जाने का आभास होता है। जल में प्रतिबिम्बित दसमी का चाँद का तिरछा मुख कभी लहरों की चंचलता में छिप जाता है, तो कभी साकार हो उठता है। उसे देख कवि को ऐसी प्रतीत होती है, मानो अपने ही रूप-यौवन से मुग्ध होकर नायिका अपने मुख को कभी चूँघट में छिपा लेती हो, तो कभी उससे बाहर करती है।

काव्य सौन्दर्य

भाव पक्ष

(i) प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने गंगा जल में पड़ने वाली परछाईं के माध्यम से आकाश, तारों एवं चन्द्रमा के सौन्दर्य पक्ष को उभारने का प्रयास किया है।

(ii) रस शान्त

कला पक्ष

भाषा संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली शैली प्रतीकात्मक छन्द

स्वच्छन्द

अलंकार उपमा, रूपक, पुनरुक्तिप्रकाश एवं मानवीकरण

शब्दार्थ चपला-नाव: कगार-किनारा: दूरस्थ-बहत-दूर तीर-किनारा;
कृश -पतला-दुबला, दुर्बल; आलिंगन-गले मिलना, मिलना, मिलन, अधीर- व्याकुल; क्षितिज-वह स्थान जहाँ धरती और आकाश मिलते हए-से-प्रतीत होते हैं: विप-माल-पेड़ों की पंक्ति; भू-रेखा-भौंह, अराल -टेढ़ा, वक्र; उर्मिल-लहरों से युक्त; प्रतीप-विपरीत; विहग-पक्षी; विकल -व्याकुल; कोक-चकवा; कोकी-चकवी; विलोक-देख।

सन्दर्भ पूर्ववत्।
प्रसंग प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने नौका विहार करते हुए दोनों तटों के । प्राकृतिक दृश्यों का मनोरम चित्र अंकित किया है।

व्याख्या कवि की नाव जब गंगा के मध्य धार में पहुँचती है, तो वहाँ से चन्टमा की चाँटनी में चमकते हुए रेतीले तट स्पष्ट दिखाई नहीं देते। कवि को । दर से दिखते दोनों किनारे ऐसे प्रतीत हो रहे हैं, जैसे वे व्याकल होकर गंगा की। धारा रूपी नायिका के पतले कोमल शरीर का आलिंगन करना चाहते हों, जिसके लिए उन्होंने अपनी दोनों बाँहें फैला रखी हैं। दूर क्षितिज पर कतारबद्ध वृक्षों को
देख ऐसा लग रहा है, मानो वे नीले आकाश के विशाल नेत्रों की तिरछी भौंहें हैं और धरती को एकटक निहार रहे हैं।
कवि आगे कहते हैं कि वहाँ पास ही एक द्वीप है, जो लहरों

कवि आगे कहते हैं कि वहाँ पास ही एक द्वीप है, जो लहरों के प्रवाह को विपरीत दिशा में मोड़ रहा है। गंगा की धारा के मध्य स्थित उस द्वीप को देख कवि को ऐसा आभास हो रहा है, जैसे कोई छोटा-सा बालक अपनी माता की छाती से लगकर सो रहा हो। वहीं गंगा नदी के ऊपर एक पक्षी को उड़ते देख कवि सोचने लगता है कि कहीं यह चकवा तो नहीं है, जो भ्रमवश जल में अपनी ही छाया को चकवी समझ उसे पाने की चाह लिए विरह-वेदना को मिटाने हेत व्याकुल हो आकाश में उड़ता जा रहा है।

काव्य सौन्दर्य

भाव पक्ष

(i) प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने अपनी सूक्ष्म कल्पनाओं द्वारा द्वीप एवं पक्षी का वर्णन कर गंगा के सौन्दर्य को अति रंजित करने का प्रयास किया है।

(ii) रस शृंगार

कला पक्ष

भाषा संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली शैली प्रतीकात्मक छन्द

स्वच्छन्द

अलंकार अनुप्रास, रूपक, उपमा, मानवीकरण एवं

भ्रान्तिमान

गुण माधुर्य शब्द शक्ति लक्षणा

शब्दार्थ प्रतनु-हलका, अत्यन्त क्षीण: डॉडा-पतवार; करतल-हाथ;
मुक्ताफल-मोतियों के फल, फेन-स्फार-झाग का समूह, अत्यधिक झाग; तार-हार-तारों की माला: रलमल-रेंगती हई: रश्मि-किरण; तरल-द्रव; लतिका-लता, बेल; उडु-नक्षत्र, तारे; उथला-कम गहरी सरिता-नदी; लग्गी-बल्ली: थाह-गहराई की माप, अन्दाजा; सहोत्साह-उत्साह के साथ।

सन्दर्भ पूर्ववत्।
प्रसंग प्रस्तुत पद्यांश के माध्यम से कवि ने नौका-विहार के दौरान गंगाजल में प्रतिबिम्ब रूप में पड़ने वाले चन्द्रमा और तारों के नृत्य का वर्णन किया है।

व्याख्या बीच धारा में पहुँचने पर अथाह जल होने के कारण नाव के भार में स्वाभाविक रूप से कमी आ जाती है। इसी आधार पर पन्त जी कहते हैं कि जब मेरी नाव गहरे पानी में धारा के मध्य जा पहँची और उसका भार अत्यधिक कमा हो गया, तब मैंने पतवारों को घमा कर नाव को धारा की विपरीत दिशा में मात्र दिया। पतवारों के चलने से जल में काफी मात्रा में झाग उत्पन्न हो रहा है। इस दृश्य को देख कवि को ऐसा आभास होता है, जैसे पतवार अपनी हथेलियों व फैलाकर उनमें झाग रूपी मोतियों को भर-भर कर तथा तारों रूपी माला तोड़-तोड़कर जल में बिखेर रहे हैं।

पतवारों के चलने के कारण नदी के शान्त जल में उठने वाली लहरें चाँदी के । साँपों-सी चमकती हुई आगे की ओर रेंगती हुई प्रतीत हो रही हैं। चन्द्रमा की किरणें लहरों पर पड़कर इस प्रकार नृत्य करती हुई-सी दिख रही है, जैसे बहते हुए जल में असंख्य सीधी रेखाएँ खिंची हुई हों। एक साथ उठती बहुत-सी लहरों में एक ही चन्द्रमा सौ-सौ चन्द्रमा और एक-एक तारा सौ-सौ तारे बनकर झिलमिला रहे हैं। उन्हें देख ऐसा आभास होता है, जैसे गंगा रूपी खेत में लहरों रूपी लताएँ फल-फूल रही हैं। किनारे की ओर लौटते हुए कवि कहते हैं कि अब नदी की गहराई कम होने लगी है और हम लग्गी से पानी की गहराई का अनुमान लगाते हुए अत्यन्त उत्साहित होकर घाट की ओर बढ़े जा रहे हैं।

काव्य सौन्दर्य

भाव पक्ष

(i) कवि ने जल में उठने वाली प्रत्येक लहर में प्रतिबिम्बित चाँद और तार का रूप की अभिव्यक्ति अत्यन्त कलात्मक और सौन्दर्यपूर्ण शैली में की है।।

(ii) रस शान्त

कला पक्ष

भाषा संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली शैली प्रतीकात्मक छन्द स्वच्छन्द

शब्दार्थ आलोकित-प्रकाशित: शत-सौ कम सिलसिला, प्रक्रिया;
शाश्वत- अमर, चिरन्तन: उद्गम् उत्पत्ति: संगम्-मिलन; रजत हास-चन्द्रमा के समान हँसी; विलास-खेल, ऐश्वर्य: कर्णधार माँझी, नाव को खेने वाला (पार लगाने वाला); चिर-पुराना, प्राचीन; मरण मृत्यु: अस्तित्व ज्ञान अपनी सत्ता का ज्ञान, ईश्वर की अमरता का ज्ञान; प्रमाण-सबूत; अमरत्व अमरता।

सन्दर्भ पूर्ववत्।

प्रसंग प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने नौका-विहार के अनुभव का वर्णन
किया है।

व्याख्या प्रस्तुत पद्यांश के माध्यम से कवि कहता है कि जैसे-जैसे हमारी नाका दूसरे किनारे की ओर बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे हमारे हृदय में सैकड़ों विचार उठते हैं। ऐसा लगता है मानो इस संसार का क्रम भी इस जलधारा के समान ही है।

व्याख्या प्रस्तुत पद्यांश के माध्यम से कवि कहता है कि जैसे-जैसे हमारी। का दसरे किनारे की ओर बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे हमारे हृदय में सैकड़ों विचार उठते हैं। ऐसा लगता है मानो इस संसार का क्रम भी इस जलधारा के समान ही है। जिस प्रकार धारा निरन्तर बहती चली आ रही है, आगे बह

चुके जल का स्थान पीछे का जल ले लेता है, उसी प्रकार जीवन का बहाव भी निरन्तर है। जलधारा के समान ही जीवन का विस्तार शाश्वत है। जीवन का क्रम धारा की तरह कभी न टूटने वाला क्रम है। कवि पन्त कहते हैं कि आकाश का यह विस्तार शाश्वत है। चन्द्रमा की चाँदी जैसी हँसी अर्थात् चाँदनी भी चिरस्थायी है। लहरों का ऐश्वर्य भी निरन्तर बना रहता है। कवि कहता है कि संसार की जीवनरूपी नौका को चलाने वाले ईश्वर जीवन की गति में जन्म एवं मृत्यु का शाश्वत कर्म बनाए रखते हैं। जीवनरूपी नौका का विहार निरन्तर होता रहता है। ।
कवि कहते हैं कि चिन्तनशील होकर मैं अपने अस्तित्व का, सत्ता का ज्ञान भूल गया। जीवन की शाश्वतता का जलधारारूपी यह शाश्वत प्रमाण मुझे अमरत्व प्रदान करता है।

काव्य सौन्दर्य

भाव पक्ष

(i) नौका-विहार के सौन्दर्य चित्रण के क्रम में कवि ने जीवन की शाश्वतता पर विचार किया है।

(ii) रस शान्त

कला पक्ष

भाषा संस्कृतनिष्ठ खडीबोली शैली प्रतीकात्मक छन्द

स्वच्छन्द ।